सम्पादकीय

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या।
विश्वस्य बीजं परमासि माया।।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्।
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

अर्थात् हे देवि, तू ही अनन्त शक्ति है। संपूर्ण विश्व का बीज तू ही है। विश्व की परम माया तू ही है। तुमने ही समस्त संसार को अपनी शक्ति से मोहित कर रखा है। तुम्हारे प्रसन्न हो जाने पर ही इस पृथ्वी पर प्राणियों को सांसारिक बन्धनों से मुक्ति मिल जाती है इसलिए तू ही इस संसार में मुक्ति का कारण भी है।

तात्पर्य यह कि मंत्र, तंत्र और यंत्र की उपासना से, साधना से और प्रयोग से अखिल विश्व का कल्याण होता है। मंत्र, तंत्र और यंत्र की शक्ति विश्वजननी शक्ति है। इसलिए भारतीय इसे अनन्तवीर्या वैष्णवी शक्ति कहते हैं।

सूक्ष्मतया विचार करें तो यह स्पष्ट प्रकट हो जाता है कि मंत्र, तंत्र, यंत्र ये ही तीन शक्तियां हैं, जिन्हें हम कभी ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कभी काली, दुर्गा, सरस्वती तो कभी मंत्र, तंत्र और यंत्र के रूप में प्रकट पाते हैं। सारांश यह कि इन्हीं तीनों में जगत की सारी शक्तियां निहित है। इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति नहीं कि मंत्र, तंत्र और यंत्र सिर्फ भारतवर्ष के लिए ही नहीं है अखिल विश्व के लिए है। इसलिए यह स्पष्ट रूप में स्मरण रखना चाहिये कि मंत्र, तंत्र, यंत्र ये तीनों विश्व के उत्पादक, पालक और संहारक हैं। इसीलिए तांत्रिक लोग इस त्रिवर्ग-शक्ति को मातृशक्ति के नाम से पुकारते हैं।

मंत्र, तंत्र और यंत्र विश्व की शक्ति धारण करते हैं। विश्व के कल्याण के लिए हैं। विश्व के मानव अपनी साधना द्वारा इनसे लाभान्वित होते रहे हैं और आगे भी होते रहेंगे। विश्व का बीज मंत्र, तंत्र और यंत्र में ही समाहित है।

हमारे सनातन धर्म में प्रत्येक देवी-देवता से जुड़े तथ्य हमेशा से ही रोचकता पैदा करते रहे हैं, फिर वह चाहे अपने भक्तों को वरदान देने के संदर्भ में हो या फिर किसी दुष्ट प्राणी को दंड देने की बात हो, शास्त्रों की पौराणिक कथायें हमें पल-पल अचंभित करती हैं, कथाओं के साथ ही विभिन्न देवी-देवताओं के प्राकट्य, तथा उनके नाम से जुड़ी कथायें भी बहुत रोचक हैं।

माँ दुर्गा के नाम से जुड़ी एक कथा काफी प्रचलित है, माना जाता है कि मां दुर्गा जिन्हें मां काली के नाम से भी जाना जाता है, उनका नाम एक बड़ी घटना के बाद ही दुर्गा पड़ा था, श्री दुर्गा सप्तशती में वर्णित एक कथा के अनुसार एक दुष्ट प्राणी पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् ही देवी को दुर्गा नाम से बुलाया गया।

यह तब की बात है जब प्रह्लाद के वंश में दुर्गम नाम का एक अति भयानक, क्रूर और पराक्रमी दैत्य पैदा हुआ, इस दैत्य के जीवन का एक ही मकसद था- सभी देवी-देवताओं को पराजित कर समस्त सृष्टि पर राज करना, लेकिन जब तक महान् देवता इस दुनिया में मौजूद थे, तब तक दुर्गम के लिए यह करना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन भी था।

अपनी सूझ-बूझ से दुर्गम ने यह पता लगा लिया था कि जब तक देवताओं के पास महान् वेदों का बल है, तब तक वह उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा, इसलिये उसने उन देवों को हड़पने की योजना बनायी, उसका मानना था कि यदि यह वेद देवताओं से दूर हो जायेंगे तो वे शक्तिहीन होकर पराजित हो जायेंगे।

ब्रह्माजी द्वारा दुर्गम को वरदान देते ही देवी-देवता, ऋषि-मुनि सारे वेदों को भूल गये, इतना ही नहीं, सभी स्नान, संध्या, हवन, श्राद्ध, यज्ञ एवं जप आदि वैदिक क्रियाएं नष्ट हो गयी, सारे भूमण्डल पर भीषण हाहाकार मच गया, वातावरण ने भी अपना प्रकोप दिखाना आरंभ कर दिया, वर्षा बंद हो गई और पृथ्वी पर चारों ओर अकाल पड़ गया। शक्तिहीन हो जाने की वजह से वह दैत्यों से भी पराजित हो गये, अब हर जगह दैत्यों का राज था और देवता परेशान थे, अपनी परेशानी का हल उन्हें मिल नहीं रहा था, सभी देवताओं ने देवी भगवती से इस कठिनाई का समाधान मांगा, हिमालय पर उन्हें माँ भगवती के साक्षात दर्शन हुये।

अपने हालात से परेशान देवताओं ने माता भगवती से मदद मांगी। ब्रह्माजी द्वारा मिले वरदान के अनुसार देवता उसे किसी भी प्रकार से पराजित नहीं कर सकते थे, इसलिये उस पर हो रहे वार का कोई असर ही नहीं हो रहा था, तब माँ भगवती ने अपने अंश से आठ देवियों का निर्माण किया।

यह आठ देवियां थी- कालिका, तारिणी, बगला, मातंगी, छिन्नमस्ता, तुलजा, कामाक्षी, और भैरवी, इन देवियों में माता भगवती की तरह ही अपार शक्तियां थीं, जिनसे वह दैत्यों से युद्ध करने की क्षमता रखती थीं। इन सभी देवियों को आज भी कलयुग में माना जाता है, लोग इनकी पूजा करते हैं तथा इन्हें प्रसन्न करने के लिये व्रत-उपवास भी रखते हैं।

इसके बाद माता भगवती के साथ देवियों और दैत्यों के बीच भीषण युद्ध हुआ, माता भगवती द्वारा प्रकट की गयी देवियों के सामने दैत्यों की शक्तियाँ बेअसर होने लगी, अंत में माता जगदम्बा के वार से दुर्गम का वध हो गया। माता भगवती द्वारा दुर्गम को मार कर देवताओं को वेद दिए गये, जिसके बाद उनकी सभी शक्तियां लौट आयी। इस घटना के बाद ही दुर्गम का वध करने के कारण भगवती का नाम दुर्गा पड़ गया।

इंसान ने जब से पंच-तत्वों की शक्ति को पहचाना, तभी से मेरा जन्म हुआ। प्रकृति के कोप से सुरक्षा के लिए हाथ उठे। आग, हवा, पानी का कहर थमा तो इंसान की आस्था बढ़ी कि जरूर कोई शक्ति है, जो सब कुछ नियंत्रित करती है। उसके ही अधीन सब हैं। मुझे नहीं मालूम कि वह शक्ति कहां है, कैसी है। वह निराकार है या साकार। मगर मैं इतना जरूर जानती हूं कि जिसने भी दिल से एक बार भगवान के आगे हाथ जोड़े, रब से खैर मांगी, उसकी जिंदगी में बदलाव की बयार बहने लगी। विज्ञान भी इस शक्ति को

कुबूल कर चुका है। प्रयोगों में यह साबित हुआ कि प्रार्थना से एक नई सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

असल में जब भी कोई प्रार्थना के लिए हाथ उठाता या जोड़ता है या अपना शीश नवाता है, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गिरजाघर या देवता के सामने ध्यान लगाकर दुःखों से छुटकारे की कामना करता है, वह एक तरीके से खुद को ही अंदरूनी तौर पर हालात से निपटने के लिए तैयार करता है। उसके अंदर एक विश्वास पैदा होने लगता है। उसे लगता है कि अब उसकी जिंदगी से विपत्तियां टल जाएंगी। उसका अच्छा वक्त शुरू हो जाएगा। ऐसा सोचते ही उसे अपने भीतर एक नई आध्यात्मिक शक्ति आत्मबल का अहसास होता है। यह सकारात्मक भावना उसमें वक्त और हालात से लड़ने की नई शक्ति देती है और वह संयम और धैर्य से बिगड़े हालात से लोहा लेने चल पड़ता है। जिंदगी के संघर्ष में हौसले से कूद पड़ता है। मैं यह तो नहीं कह सकती कि प्रार्थना करने वाले को अदृश्य शक्ति से कोई मदद मिलती है या नहीं, लेकिन उसमें जो परिवर्तन आता है, वह उसे जिंदगी की जंग के लिए तैयार कर देता है। किसी ने कहा है :

कश्ती रवां-गवां है इशारा है नाखुदा
तूफान में कश्ती का सहारा है नाखुदा

अर्थात् कश्ती अगर तूफान के भंवर में फंस जाती है तो एकमात्र सहारा मल्लाह ही होता है। असल में हमारी जिंदगी हालात के भंवर में हिचकोले खाती एक कश्ती (नाव) ही तो है, जिसके नाखुदा (मल्लाह) हम ही हैं। हौसला है तो हम लहरों से पार पा जाते हैं। भंवर से निकल जाते हैं, लेकिन हममें साहस नहीं तो फिर डूबना तय है। प्रार्थना साहस देकर डूबने से बचाती है।

कहते हैं कि जब कुछ नहीं होता तो सिर्फ प्रार्थना होती है। कितनी बार इंसान ऐसे हालात में घिर जाता है, जहां मदद भी काम नहीं आती।

शास्त्रों में कहा गया है कि पितृ का स्थान देवताओं के समान है। देवता अगर प्रसन्न हों लेकिन पितृ नाराज हों तो देवताओं से शुभ फल मिलने में बाधा आती है। इसलिए पितरों को प्रसन्न रखने के लिए श्राद्ध और पिण्डदान का नियम बनाया गया है। भाद्रपद महीने की शुक्ल पक्ष पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण पक्ष की अमावस्या तक के समय को श्राद्ध पक्ष कहा जाता है।

इस दौरान पितृगण धरती पर आते हैं और अपनी संतान से पिण्डदान एवं श्राद्ध का अंश प्राप्त कर संतुष्ट होते हैं।

गरूड़ पुराण के अनुसार पितरों के निमित्त किया गया श्राद्ध का अंश पितर जिस लोक में होते हैं उन तक पहुंच जाता है। शास्त्रों में कहा गया है कि पितरों का नाम और गोत्र लेकर मंत्र सहित जो अन्न जल अर्पित किया जाता है वह पितरों तक अलग-अलग रूप में पहुंचता है। अगर कर्मों के अनुसार पितृ देवलोक में होते हैं तो श्राद्ध का अंश उन्हें अमृत रूप में प्राप्त होता है।

गन्धर्व लोक में होने पर भोग्य रूप में, पशु योनि में होने पर तृण रूप में श्राद्ध का अंश पहुंचता है। यक्ष होने पर पेय पदार्थ के रूप में, सर्प योनि में होने पर वायु रूप में और दानव योनि में होने पर मांस रूप में श्राद्ध का अंश पितृगणों तक पहुंचता है।

प्रेत योनि में गये पितरों के पास श्राद्ध का अंश रक्त रूप में तथा मनुष्य होने पर अन्न रूप में पहुंचता है। जिन पितृगणों को मुक्ति मिल चुकी होती है उनके पास गया अंश आशीर्वाद बनकर श्राद्ध करने वाले के पास लौट आता है।

पितरों को संतुष्ट और प्रसन्न करने वालों को संतान सुख प्राप्त होता है। मान-सम्मान में वृद्धि होती है। धन संबंधी परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता है। पितरों की पूजा एवं श्राद्ध करने वालों को मृत्यु के बाद उत्तम लोक में स्थान प्राप्त होता है। शास्त्रों में लिखा है कि जो लोग पितरों को संतुष्ट नहीं कर पाते हैं उन्हें स्वर्ग में स्थान नहीं मिलता है, क्योंकि उन पर पितृऋण चढ़ा रहता है।

श्राद्ध पक्ष में ब्राह्मण भोजन के अलावा दान का भी बड़ा भारी महत्व है। शास्त्रों के अनुसार श्राद्धपक्ष में पितरों के निमित्त किये गये दान का उत्तम फल प्राप्त होता है। कालसर्प दोष एवं पितृ दोष भी इस समय किये गये दान से दूर होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि व्यक्ति की जैसी श्रद्धा और सामर्थ्य हो उसी अनुरूप श्राद्ध पक्ष में पितरों के निमित्त दान करना चाहिए। आइए जानें शास्त्रों के मुताबिक इस समय के लिए सबसे उत्तम दान किन्हें माना गया है।

शास्त्रों में गौ दान को उत्तम दान कहा गया है। गरुड़ पुराण के अनुसार मृत्यु के समय जो व्यक्ति गाय की पूंछ पकड़कर गाय का दान करते हैं उसे मृत्यु के बाद वैतरणी नदी पार करने में आसानी होती है। वैतरणी नदी यमलोक के रास्ते में है। पितृपक्ष में गाय का दान करने से पितर प्रसन्न होते हैं और अपने वंशजों को सुख एवं ऐश्वर्य का आशीर्वाद प्रदान करते हैं।

काले तिल भगवान विष्णु को प्रिय है। श्राद्ध के हर कर्म में तिल की आवश्यकता होती है। श्राद्ध पक्ष में दान करने वाले को कुछ भी दान करते समय हाथ में काला तिल लेकर दान करना चाहिए। इससे दान का फल पितरों को प्राप्त होता है। अगर कुछ अन्य वस्तु दान नहीं कर रहे हैं तो सिर्फ तिल का दान भी किया जा सकता है। तिल का दान करने से पितरगण संकट एवं विपदाओं से रक्षा करते हैं।

शास्त्रों में भूमि दान को सर्वोत्तम दान में से एक कहा गया है। महाभारत में कहा गया है कि भूलवश बड़े से बड़ा पाप हो जाने पर भूमि दान करने से पाप से मुक्ति मिल जाती है। मान्यता है कि पितरों के निमित्त भूमि दान करने से पितरों को पितर लोक में रहने के लिए अच्छा स्थान मिलता है। भूमि दान से यश, मान-सम्मान एवं स्थायी संपत्ति में वृद्धि होती है।

पुराणों के अनुसार पितरों का निवास चन्द्र के ऊपरी भाग में है। शास्त्रों के अनुसार पितरों को चांदी की वस्तुएं प्रिय हैं। चांदी, चावल, दूध से पितर खुश होते हैं। इन वस्तुओं के दान से वंश की वृद्धि होती है एवं मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

गरुड़ पुराण एवं कई शास्त्रों में बताया गया है कि पितरों को भी हमारी तरह सर्दी, गर्मी का एहसास होता है। मौसम के प्रभाव से बचने हेतु पितरगण अपने वंशजों एवं पुत्रों से वस्त्र की इच्छा रखते हैं। जो व्यक्ति अपने पितरों के निमित्त वस्त्र दान करते हैं उन पर सदैव पितरों की कृपा बनी रहती है। पितरों को धोती एवं दुपट्टा का दान करना उत्तम माना गया है। वस्त्र दान से यमदूतों का भय समाप्त हो जाता है।

जिन लोगों के घर में अक्सर कलह एवं आर्थिक परेशानी बनी रहती है उन्हें पितरों के निमित्त गुड़ एवं नमक का दान करना चाहिए। गरुड़ पुराण के अनुसार नमक के दान से यम का भय दूर होता है।

अतः इस बार माँ भगवती व अपने पूर्वजों की श्रद्धा से भक्ति प्रार्थना कर सुखी-समृद्ध होने का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करें। □□□

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
श्रीमती इन्दू श्रीमाली